[شری سید احمد هاشمی]

پورے دلی شہر کے اندر یہی سچوپشن ھے - ایک ایک قطرہ پانی کے لئے لوگ ترس رھے ھیں اور پورے دلی شہر کے لوگوں کو بہت زیادہ تکلیف ھو رھی ھے اس لئے دلی کے لوگوں کی اس پریشانی پر پورن توجہ کی ضرورت ھے -

†[श्री सैयद अहमद हाशमी (उत्तर प्रदेश) : ये तो इन मेम्बरों ने अपनी बिपता ब्यान की—जोकि नार्थ और साउथ एवेन्यू में रहते हैं लेकिन सिचुवेशन यह है कि यह सिर्फ साऊथ एवेन्यू और नार्थ एवेन्यू की बात नहीं है पूरे दिल्ली शहर के अन्दर यही सिचुवेशन है—एक एक कतरा पानी के लिये लोग तरस रहे हैं और पूरे दिल्ली शहर में लोगों को बहुत ज्यादा तकलीफ हो रही है इसलिये दिल्ली के लोगों की इस परेशानी पर पूरी तवज्जो की जरूरत है ।]

ARREST AND RELEASE ON BAIL OF SHRI M. C. BALAN, MEMBER OF RAJYA SABHA

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have to inform Members that a telegram dated the 20th June, 1977, regarding arrest and release on bail of Shri M. C. Balan, Member, Rajya Sabha, has been received from the Assistant Commissioner of Police, Madras, an extract of which is as follows:

"I have the honour to inform you that I have found it my duty in exercise of my powers under section 4|1|J Tamil Nadu Prohibition Act to direct that Thiru M. C. Balan, Member of Rajya Sabha, be arrested. Thiru M. C. Balan, M.P., was accordingly arrested by Assistant Commissioner of Police between 01 hour and 02 hours today 20-6-77 and released on bail immediately."

THE OIL AND NATURAL GAS COMMISSION (AMENDMENT) BILL, 1977.

THE MINISTER OF PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI H. N. BAHUGUNA): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Oil and Natural Gas Commission Act, 1959.

The question was put and the motion was adopted.

SHRI H. N. BAHUGUNA: Sir, I introduce the Bill.

APPRECIATION OF THE SERVICES RENDERED BY SHRI BHUPESH GUPTA AND OTHER DISTINGUISHED MEMBERS OF THE RAJYA SABHA

सदन के नेता (श्री लाल कृष्ण आडवाणी) : उपसभापति जी, आपकी अनुमति से मैं समझता हूं कि एक कर्त्तव्य हम निभायें तो अच्छा रहेगा, एक अच्छी परम्परा रहेगी । यही कल शाम को जब रजत जयंती समारोह हुआ तब हमने इस सदन के अनेक सम्माननीय सदस्यों का उल्लेख किया और आखिर में ऐसे भी एक सदस्य का उल्लेख किया जो इस सदन में आरम्भ से रहे और जैसे मैंने कल कहा कि वे स्वयं एक संस्था बन गये, श्री भूपेश गुप्त । मैं समझता हूं कि यह उपयुक्त रहेगा अगर सदन की कार्यवाही में भी सदन की यह भावना लिपिबद्ध हो जाय और हम सबका उनके प्रति स्नेह और सम्मान एक प्रकार से सदन की कार्यवाही का रिकार्ड बन जाय ।

मुझे विश्वास है कि मैं जब यह कह रहा हूं तब मैं सम्पूर्ण सदन की, सब दलों की, सब साथियों की भावनाओं को व्यक्त कर रहा हूं । यह सही है कि राजनीतिक विपक्षी होने के कारण अनेक बार हम एक दूसरे की आलोचना करते रहे हैं, वह हमारी करते हैं हम उनकी करते हैं, लेकिन इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि एक अच्छे संसदज्ञ को

†[ ]Devnagari translation.

जितनी सतर्कता रखनी चाहिये, जितना परिश्रम करना चाहिये, जितना हर विषय के बारे में ध्यानपूर्वक मनन करके अपनी बात आग्रहपूर्वक रखने का एक ढंग होना चाहिये इस बारे में गुणों की दृष्टि से भूपेश जी में कोई कमी नहीं है। उनके मुकाबले शायद कोई खड़ा नहीं हो सकता बहुत मुश्किल है। शायद हिन्दुस्तान के सब लेजिस्लेचर्स में ऐसे लोग बहुत कम होंगे जो लेजिस्लेचर वर्क के प्रति इतने जागरूक हों और इतनी सजगता के साथ, इतनी लगन के साथ लेजिस्लेचर वर्क करते हों जितना कि वह करते हैं। मैं स्वयं अपने बारे में कहता हूं कि मैं बहुत सीमित विषयों पर बात करता हूं, 2–4 विषयों के बारे में ही अपनी बात करता हूं। लेकिन कोई भी विषय हो चाहे वह राजनीतिक हो, आर्थिक हो, अंतर्राष्ट्रीय हो, सांस्कृतिक हो, शैक्षणिक हो हर विषय पर बोलने यही आते हैं। इसके अलावा वह विषय चाहे सूचना से आता हो, चाहे बिना सूचना से आता हो और किसी को चाहे कोई टिप्पणी करनी हो या नहीं करनी हो परन्तु भूपेश जी को करनी है और जो भी टिप्पणी वह करेंगे उसमें तथ्य जरूर होगा।

मैं इस मौके पर उनके प्रति अपने विनम्र आदर के भाव व्यक्त करता हूं और आशा करता हूं कि वह हमारे सदन को, सदन की कार्यवाही को काफी लम्बे काल तक समृद्ध बनाते रहेंगे।

उपसभापति जी, इस प्रसंग का लाभ उठाकर मैं और भी एक उल्लेख करना चाहूंगा क्योंकि कल अनेक माननीय सदस्यों का मैंने उल्लेख किया। यों तो इस सदन के इतने सदस्य रहे हैं और सब अपनी अपनी दृष्टि से सम्माननीय रहे हैं, प्रतिष्ठित रहे हैं, सब का अपना अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है लेकिन उनमें से जब मैंने कुछ गिनाये तो बाद में मुझे ऐसा लगा कि कम से कम कुछ और भी नामों का, जो नहीं गिनाये उनका भी उल्लेख करूं। जैसे कि मुझे कल इस बात का बाद में खेद रहा कि हमारे इस सदन की जो उपसभापति रही और बड़ी योग्यता से कई वर्षों तक उन्होंने इस सदन की कार्यवाही का संचालन किया और जो आज इस संसार में नहीं हैं, श्रीमती वायलेट अल्वा, उनका उल्लेख होना चाहिये था उस तालिका में, जो मैंने कल नहीं किया।

श्रीमती सुमित्रा जी० कुलकर्णी (गुजरात): श्रीमती रुक्मणी अरुंडेल।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी: मैं अभी उनका उल्लेख करता हूं और इसके अलावा और भी नाम मुझे सूझे हैं। मैं यह नहीं कहता कि जितने नाम मुझे सूझे हैं, वह सूची पूरी है उसके बाद भी कुछ नाम रह जाते हैं। परन्तु जिनका मैं नाम नहीं लेता हूं उन सबके प्रति मेरे मन में निरादर की भावना नहीं है। जो-जो मुझे नाम सूझे या सुझाये गये है उनका मैं उल्लेख करना चाहूंगा। जो इस सदन में सम्माननीय सदस्य रहे हैं श्रीमती वायलेट अल्वा के साथ साथ। यहां पर श्री अन्नादुराइ रहे जो दक्षिण भारत के तामिलनाडु राज्य के बड़े सफल मुख्य मंत्री रहे, जिनको व्यापक आदर प्राप्त है देश भर मे, उनका उल्लेख मैंने कल अपने उस क्रम में नहीं किया था।

कुछ ख्याति-प्राप्त कलाकार भी रहे हैं इस सदन में, जैसे कि श्रीमती रुक्मणी अरुंडेल या पृथ्वीराज कपूर या एस० एस० वासन, जो कि नोमिनेटिड मेम्बर थे लेकिन कला जगत के प्रसिद्ध और विख्यात नेता रहे।

मैंने कल कुछ मंत्रियों का उल्लेख किया जो हमारे साथी रहे इस सदन में और बाद में लोक सभा के सदन में चले गए और जो मंत्रिमण्डल के सदस्य हैं। लेकिन उनमें से हेगड़े जी का नाम मुझ से रह गया उस समय, जो कि इस सदन के सदस्य ही नहीं रहे बाद में वे सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश भी बन गए। आज वे हमारे उस सदन की शोभा बढ़ाते हैं।

श्री डी० पी० सिंह (बिहार) : श्री कृष्णा मेनन का नाम...

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : वैसे ही श्री कृष्णा मेनन और श्री अच्युत मेनन जो केरल के थे हमारे इस सदन के सदस्य रहे हैं, उनके नाम भी विशेष उल्लेखनीय हैं ।

श्री सीताराम केसरी (बिहार) : हिन्दी के साहित्यकार और कवि हरिवंशराय बच्चन भी थे ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हरिवंशराय बच्चन और उमाशंकर जोशी, ये ऐसे साथी रहे हैं, जो आज भी साहित्य के क्षेत्र को समृद्ध कर रहे हैं ।

श्री कोटा पुन्नैया (आंध्र प्रदेश) : अल्लूरी सत्यनारायण राजू ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हां, वे भी इस सदन के सदस्य रहे । सचमुच में, जितने भी आप नाम गिनवाएंगे वे सभी उल्लेखनीय है ।

श्री रणबीर सिंह (हरियाणा) : श्री महाबीर त्यागी ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : महाबीर त्यागी जी को सचमुच कोई नहीं भुला सकता, तो भी मैं भूल गया; मेरी गलती है ।

श्री सीताराम केसरी : मेथिलीशरण गुप्त ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : इसी तरह गुरुमुख सिंह मुसाफिर थे, श्री टी० एन० सिंह हैं...

श्री गुरुदेव गुप्त (मध्य प्रदेश) : मैथिलीशरण गुप्त । वे भी हमारे सदस्य रहे ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त का नाम सुझाया जा रहा है । श्री गोपाला स्वामी आयंगर और अभी जिनका निधन हुआ प्रो० रत्नस्वामी और श्री रामस्वामी मुदालियर—सचमुच नामों की श्रृंखला इतनी बड़ी है सारी की सारी कि अगर 10-15 नाम चुनने लगूं तो उन के नामों पर और 60, 70 या 80 सरलता से हो जाते हैं । इसलिए सब के प्रति कृतज्ञता, आदर और सम्मान के भाव व्यक्त करूंगा ..

श्री सीताराम केसरी : पं० गोविन्द बल्लभ पंत भी थे ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : पं० गोविन्द वल्लभ पंत हमारे सम्माननीय सदस्य रहे ।

श्री रणबीर सिंह : पं० भगवत दयाल शर्मा भी इस सदन के सदस्य रहे...

श्री भइया राम मुण्डा (बिहार) : एक नाम है रामधारी सिंह "दिनकर" जी का ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : श्री दिनकर और श्री देवी प्रसाद घोष का नाम लेना उपयुक्त होगा ।

एक माननीय सदस्य : आपकी जनता पार्टी के सदस्य हैं, श्री चन्द्रशेखर ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अब उपसभापति जी, मैंने जो रेफरेन्स किया, मेरे रेफरेन्स की बजाए अब एक सामूहिक रेफरेन्स के तौर पर काफी बड़ी मात्रा में सभी उल्लेखनीय नाम आ गए । मुझे प्रसन्नता है, ये सब रिकार्ड में जाएगा तो उसमें हमारे सदन की गरिमा रहेगी । धन्यवाद ।

श्री रनवीर सिंह : उपसभापति जी, इस संबंध में एक लिष्ट बनाई गई थी वह शामिल कर ली जाये ।

विपक्ष के नेता (श्री कमलापति त्रिपाठी) : आज राज्य सभा की रजत जयंती के अवसर पर, जब कि उसके 25 वर्ष पूरे हुए हैं और उसके सत्र भी 100 के ऊपर हो चुके हैं; जिन उल्लेखनीय व्यक्तियों के नामों का उल्लेख किया गया है, विशेष कर हमारे

भाई श्री भूपेश गुप्त जी के लिए जो भावनाएं उन्होंने व्यक्त की, उन भवनाओं के साथ मैं अपने को संबद्ध करता हूं और मैं यह मानता हूं कि हमारे नेता ने सदन में जिन भावों को व्यक्त किया है वह केवल किसी एक दल का भाव नहीं है, किसी एक व्यक्ति का भाव नहीं है, वह सारे सदन के प्रति भाव है और सभी दलों की ओर से उन विचारों को उन्होंने प्रगट किया है। तो उन उद्‌गारों के साथ हम सब लोग अपने को सम्बद्ध करते है। मान्यवर, राज्य सभा की स्थापना एक महान संघर्ष के बाद हुई थी। बहुत वर्षों तक 1857 से लेकर 1947 तक भारत की स्वतन्त्रता का युद्ध इस देश में लड़ा गया। करीव-करीब 90 वर्ष की क्रान्ति के बाद हमारा यह देश गांधी जी के नेतृत्व में स्वाधीन हुआ। उसके बाद, मान्यवर, संविधान की रचना हुई और मुझे वह दिन अच्छी तरह से स्मरण है जब आप के इसी केन्द्रीय हाल में, जिसे सेण्ट्रल हाल कहते हैं, डा० राजेन्द्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में संविधान सम्मेलन कई वर्षों तक चलता रहा, दो तीन वर्षों तक। मेरा सौभाग्य था उस सम्मेलन में एक सदस्य के नाते उस समय उपस्थित रहने का। संविधान की रचना हुई स्वाधीन भारत की स्वाधीनता के प्रतीक के रूप में और उसके अनुसार राज्य सभा की स्थापना हुई।

भूपेश जी 25 वर्षों से राज्य सभा के सदस्य है और जैसा नेता सदन ने कहा, वे केवल मात्र सदस्य नहीं हैं, स्वयं एक संस्था हो गये है। भूपेश जी का मैं स्वागत करता हूं और उनके प्रति मैं समादर व्यक्त करता हूं केवल इसलिए नहीं कि 25 वर्षों से वे राज्य सभा के सदस्य हैं। राज्य सभा के माध्यम से उन्होंने देश की बड़ी भारी सेवा की है इसमें सन्देह नहीं। राज्य सभा में उनका अभिनय, उनका काम, उनकी सतर्कता, उनकी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय हम लोग पाते रहे हैं। वे इस सदन में समस्त प्रगतिशील विचारों के लिए लड़ते रहे है बिना इस बात का विचार किये हुए कि कौन उनसे नाराज होता है, कौन खुश होता है। जहां कहीं देश के हित की बात आयी, विशेषकर दबे हुए लोगों को उठाने की बात आयी, जहां कहीं प्रगतिशीलता की बात आयी, समाजवादी विचारों की जहां कहीं बात हुई, बराबर भूपेश जी उसके सम्बन्ध में बोलते रहे।

यह बात भी सही है कि वह केवल संसद् के एक अच्छे सदस्य मात्र नहीं है, वे बहुत सतर्क और सावधान हैं, साथ-साथ देश के बहुत बड़े सेवक है। मैं उनका स्मरण इस दृष्टि से भी करता हूं कि वे भारतीय स्वाधीनता के युद्ध के और उस काल के संघर्ष के बहुत बड़े, अच्छे और कट्टर सिपाही रहे हैं। 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बहुत छोटी उम्र में, बहुत थोड़ी अवस्था में उन्होंने हिस्सा लिया जब वे विद्यार्थी ही थे। बहुत से विद्यार्थी गांधी जी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह सविनय अवज्ञा के आन्दोलन में उतरे। भूपेश बाबू भी उतरे और उन्होंने सजा भी भोगी। उसके बाद क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए उनकी गिरफ्तारियां हुई। तब से बराबर देश की सेवा के मार्ग में वे काम करते रहे है, उसके लिए यातनाएं भोगते रहे है, जेल जाते रहे हैं।

राज्य सभा की सदस्यता देश की स्वाधीनता के बाद उन्हें उपलब्ध हुई। देश की स्वाधीनता के संघर्ष में जो त्याग, जो बलिदान और जो दृढ़ता और संकल्प की भावना उन्होंने दिखाई उसका आदर हम सब लोग आज तक करते है जिससे हमें प्रेरणा मिलेगी और भविष्य में आने वाली हमारी संततियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

भूपेश बाबू बड़े अच्छे लेखक है, पत्रकार है, बहुत अच्छे वक्ता है। उनकी भाषा में बड़ा प्रवाह है. उनकी बोलने की शैली बहुत सुन्दर है, बड़े प्रभावकारी ढंग से बोलते है—भाषा की ओजस्विता, तेजस्विता और सबलता तो प्रत्यक्ष है, यद्यपि बोलते हैं एक विदेशी भाषा

[श्री कमलापति त्रिपाठी]

में—उस पर उनका इतना अधिकार है कि वह प्रशंसा की बात है । जब वे बोलने लगते हैं मान्यवर, तब किसी को देखते नहीं दाहिने-बायें । मै समझता हूं श्रीमन्, कि आपका भी अंकुश उन पर काम नही करता । कारण यह होता है कि उनके हृदय में संकल्प होता है भावना होती है, उस भावना की अभिव्यक्ति की इच्छा होती है बड़ी दृढ़ता के साथ और उसे वे व्यक्त करते चले जाते हैं । लेखक भी हैं, पत्रकार भी हैं, देशभक्त भी हैं । संसद् की पद्धति के बड़े समर्थक भी हैं । भाषा पर अधिकार उनका है । व्याख्याता बहुत सुन्दर है और 25 वर्षों तक देश की सेवा के मार्ग में 16 वर्ष की अवस्था से लगे हुए हैं ऐसे व्यक्ति ने 1952 के बाद जब से राज्य सभा में सदस्य हुए हैं बराबर इसके माध्यम से देश की सेवा करते रहे हैं । आज उनके प्रति हम सब का समादर है । मान्यवर, हमारे विपक्ष की तो वह शोभा ही है लेकिन मैं समझता हूं कि भूपेश बाबू इस सदन की भी शोभा है । अगर वे यहा न रहें तो क्या ऐसा नही लगता कि सदन कुछ सूना सूना लगेगा और ऐसा लगेगा कि जैसे कोई व्यक्ति का लोप यहां से हो गया हो जिसके बगैर कुछ जान नहीं आ रही हो । ऐसे व्यक्ति के प्रति आज इस अवसर पर अपना आदर, सम्मान, अपनी शुभ कामना व्यक्त करता हू । अवस्था में मुझ से छोटे है । मुझे अधिकार है उन्हें कुछ आशीष भी देने का और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें चिर-आयुष प्रदान करे ताकि वह देश की सेवा करते रहें और देश के युवकों को प्रेरणा प्रदान करते रहें । नेता सदन ने बहुत से लोगों का नाम लिया । मैं समझता हूं कि अच्छा किया उन्होंने । बहुत से हमारे ऐसे लोगों का स्मरण किया जिन्होंने इस सदन की शोभा बढाई है और इस सदन के गौरव को बढाया है । लेकिन मैं समझता हूं कि उनकी तालिका जो है वह पूरी नहीं हुई । यदि आप मुनासिब समझे मान्यवर, तो अच्छा होगा कि आप अपने कार्यालय को इस बात के आदेश दें कि वह पूरी तालिका बना कर सदन की मेज पर रखे उसके बाद हम उसे प्रकाशित करने की चेष्टा करें ताकि हम सब जाने अनजाने जिनका नाम है या नहीं है, उनकी देख समझ कर उनके प्रति अपना समादर व्यक्त करें । इन शब्दों के साथ मान्यवर, मैं अपने को नेता सदन के साथ सम्बद्ध करता हूं और भूपेश जी के प्रति आदर और सम्मान की भावना व्यक्त करता हूं । उनकी चिरायुष्य के लिये भगवान् से प्रार्थना करता हूं । धन्यवाद ।

श्री रणबीर सिंह : उपसभापति जी, जनरल परपजेज समिति ने एक लिस्ट बनाई थी...

डा० रामकृपाल सिंह (बिहार) : इस सदन के एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति और इस देश के सम्मानित नेता थे आचार्य नरेन्द्र देव । (*Interruptions*).

श्री उपसभापति : सदन के नेता ने जो कहा उसके बाद इस पर चर्चा नहीं की जाय तो अच्छा होगा ।

I associate myself with the warm sentiments expressed and felicitations offered by the Leader of the House and the Leader of the Opposition to Shri Bhupesh Gupta. It is rarely given to an individual to celebrate Silver Jubilee of a significant event of such a magnitude, in his life or career. Shri Bhupesh Gupta is among the fortunate few. He made his debut in Rajya Sabha in May, 1952—since its inception, and has completed 25 years of uninterrupted parliamentary career in this House—uninterrupted even for a single day. He has thus established a unique record and today he is the senior-most Member of the Rajya Sabha. It is not without reason that he is affectionately called "Dada" by all the sections of this House. I take this opportunity of extending my sincere and heart-felt felicitations and regard to Shri Bhupesh Gupta on this happy occasion.

Some of the country's ablest parliamentarians have sat in the Opposi-

tion Benches in the Rajya Sabha but the first name that comes up before one's mind as one thinks of the Opposition in the Rajya Sabha is that of Shri Bhupesh Gupta. Brilliant and indefatigable, Shri Gupta participates almost in every debate in the House. He flourishes on interruptions and his contribution to the debate, in respect of both volume and quality, will always remain an outstanding record in the parliamentary annals of the country. Shri Gupta has become an institution. As has just been mentioned by the Leader of the House and the Leader of the Opposition, a man of indomitable will and courage of his convictions, Shri Bhupesh Gupta made valuable contributions to our national life both inside and outside the legislature throughout this period.

I may say that Shri Bhupesh Gupta has become very much a part of the Rajya Sabha and it is difficult to imagine the Rajya Sabha without him. He is always watchful of rules, quick on the uptake and jealous of the rights of Members on either side. Very often he gives the impression of a one man opposition, demanding consistent attention from the Treasury Benches and receiving it. Like every good parliamentarian, Mr. Gupta has an instinctive sense of the dramatic. His style is flamboyant, his choice of phrase picturesque. He has a simplicity and a rare sense of sincerity in all that he does. He is respected and held in high esteem and affection by each and every Member of this House.

We hope that we would continue to have the privilege of his association for many more years to come and his poise would lend greater embellishment and dignity to the parliamentary life and free institutions of this country.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Sir, it has been my privilege and honour to have belonged to this House for a quarter of a century. But it is not for me to say what role I have played, from the standpoint of which I have worked in this House. However, I have tried, to the best of my ability, to serve my country, our great people, to uphold its cherished culture, our noble inheritance from an undying, ancient civilisation.

Sir, it is not an individual who shines in this House. We have shone in this House collectively. Each of us has succeeded to the extent to which we have shared in this House the urges and aspirations of our people, men and women who live in mud-huts and slums, in agony and misery, in unemployment, destitution, illiteracy and disease. It is by sharing their sorrow and suffering and yet giving expression to their indomitable urge for a better and brighter future that we justify, all together, in mutual co-operation and brotherly friendship, our existence in this House.

If you ask me, "What has been your best asset in the work of the House?", if it is outside, I will say "My faith in the people and the inspiration from them"; if it is inside the House, 'It is Sir, the affection of my colleagues in this House". Nothing has been more cherished by me than the unfailing and abiding affection, at times almost bordering on undue indulgence, that has been given to me. I will ever remember this thing with a sense of pride and gratitude as a matter of inspiration.

Sir, in this House when I came, there were many illustrious people, men eminent in their own right in various walks of public life. Today it gives me a little pain when I am here alone with none of those with me who entered on the first day in this House when I joined it.

Sir, the words that have been spoken for me, well, these are extremely kind words. But I have my doubt, and I think that I am right in my doubt, whether at all I deserve

[Shri Bhupesh Gupta]

them. After all, what is important from you and others is your affection and I do not think any one of us, at least certainly not me, is entitled to all that you have said. because, Sir, I say that here our achievement has been a collective achievement. Sir, I have always felt that the Rajya Sabha must be a vibrant tribune of the people.

And from the first day when I came—may I share a thought with you—there were some people here who thought of cutting the role of the House of Lords for us, although none of us came by way of heredity or as peers. But people thought that the Westminster style would be most suitable, if hat was not acceptable. let us go to the American Senate. But thanks to the genius of our people, the tradition of our freedom movement, the wisdom of our members now both inside and outside the House, and I must say, thanks to Dr. Radhakrishnan, Jawaharlal Nehru and others, we did not accept the position of being a House to echo what goes on in the other House.

We are a House in our own right asserting our own individuality, asserting our own personality, asserting our own character as a vibrant living tribune of Parliament. Call us Second Chamber, if you like. I do not know who decided it that we are a Second Chamber. We are a Chamber all right. But who says it is a Second Chamber? It is one of the two Chambers which constitute Parliament. That is all. Some people call us Upper House. I do not know which is the Lower House and how suddenly we became Upper. I do not understand it. Now, all these are borrowed phraseology from the West, and we have no contempt for that. I think we are the Rajya Sabha and the other Lok Sabha. Sir, finally I should like to say that we have in this House built some great traditions. Here—perhaps our number is small—we have always held together despite our quarrels, exchanges, stormy scenes, as if we are members of a family. That family-mindedness in this Chamber has been a great inspiration for all of us. We have not sought ourselves in a crowd; we have sought ourselves in the image of others mutually helping each other, whether you sit in the Opposition or on the Government benches. That is another aspect of the House.

Sir, I must in this connection go on record that we have truly cherished the cooperation of the memers of our Rajya Saha Secretariat. I have found through 25 years how useful it is with the Secretariat the members of the Rajya Sabha Secretariat, all the members of the staff, the people who stand there the people who stand here, the people who type our Notices and those ohers who look after our papers, all of them, each in his own way, have contributed to the building up of the noble traditions that we have got in this House now. Our House symbolises a spirit of cooperation. And it is undoubtedly a matter of great joy for us that we are speaking and talking Members but the members of our Rajya Sabha Secretariat—every one of them, I do not exclude anyone—I take them as the silent. cooperative, members of our institution. I cannot, think that the majestic and style of this institution is advanced without taking into account the contribution which they have made Sir these are some of the words I wanted to put on record.

Sir, I must again thank all my friends for the kindness they have shown. I do sincerely hope I shall never be failing in doing my duty to get some of your kindness, some of your affection, if you like if I may say so and I should say even some of your institution I cannot think that the ageing you will put up with the age a little and have a little sympathy for an ageing man. because after all, when I came here I was 25 years' younger; today I am 25 years' older. And in these 25 years much has happened in the life of the nation to

teach us all and may I hope the Rajya Sabha will rise to the occasion, serving the people better than it has and become truly an instrument of social change and service to the toiling masses, it will uphold the majesty and greatness and the brilliance and beauty of our nation, it will be the spokesman of the great heritage of our undying and unfailing and unfading culture?

I hope in this House India's voice will be heard, the voice of the millions which after all, in the final analysis makes Parliament what it is, gives it character and quality. Our rapport with the people is our greatest asset and I do hope all of us will cooperate collectively work for building up bolder ties with the masses, seek counsel with them and give full expression in policies and otherwise to the urges that inspire them, the urges that set them in majectic historic motions. We are on the march and let us, in this House, march in step with the life outside.

Thank you again and all others—my esteemed and dear colleagues—for the kind words they have spoken about me.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us take up General Budget, 1977-78.

AN HON. MEMBER: Why not we adjourn for lunch?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The House stands adjourned till 2 P.M.

The House then adjourned for lunch at fiftyone minutes past twelve of the clock.

The House reassembled after lunch at five minutes past two of the clock,

Mr. Deputy Chairman in the Chair

THE BUDGET (GENERAL) 1977-78 —GENERAL DISCUSSION—contd.

SHRI SARDAR AMJAD ALI (West Bengal): Mr. Deputy Chairman, Sir, the Budget is broadly a barometer of the Government's economic policy and reflects an approach, so far as the fiscal policy of the Government is concerned, and indicates the direction to which the Government wants to take this country.

Now, Sir, the Budget that has been presented by the Janata Government gives certain clear indication as to how the Janata Government wants to tackle the problems which the Finance Minister in his Budget speech has analysed and to which direction the Government wants to take this country.

Sir, in order to be fair enough, I must say that by and large I agree with the analyses of the Finance Minister as far as the problems of this country are concerned. He has very rightly analysed that the present problems of this country are to tackle the growing unemployment and to tackle the problems of millions of people who live in the rural sector, as also certain other very important factors which he has stated in paragraph 14 of his speech in Part 'A'. I quote:

> "The task ahead is to devise an effective strategy for dealing with the problems of inadequate growth, crushing poverty, unemployment, growing regional imbalances and rising prices . . ."

These, in brief, according to me are the basic problems of this country. Now, Sir, it has been the concern of the former Finance Ministers that the growth rate in this country, in spite of having a planned economy and a substantial investment in the public sector as well as in the industrial and agricultural sectors, has not been satisfactory. Perhaps the Finance Minister is right in indicating that the growth rate that could be achieved during the last few years and during the last four Five Year Plans was not satisfactory. It has been the concern of all the Finance Ministers and I am sure this has become the concern of the presnt Finance Minister also.